मूर्खों का स्वर्ग

आइज़ैक सिंगर

किसी समय किसी देश में काडिश नाम का एक रईस आदमी रहता था। उसका एक ही बेटा था जिसका नाम अत्ज़ेल था। काडिश के घर अक्साह नाम की एक अनाथ लड़की भी रहती थी जो उनके दूर की रिश्तेदार थी। अत्ज़ेल और अक्साह दोनों लगभग एक ही उम्र के थे। दोनों साथ खाते, साथ खेलते और साथ पढ़ते थे। और यह मानकर चला जा रहा था कि बड़े होने पर इन दोनों की आपस में शादी कर दी जाएगी।

लेकिन तभी एक दिन अचानक अत्ज़ेल बीमार पड़ गया। उसे एक ऐसी बीमारी हो गई जिसके बारे में आज तक न किसी ने देखा था, न सुना था। उसे वहम हो गया कि वह मर गया है। और उसने मान लिया कि वह सचमुच मर गया है।

लेकिन ऐसी वाहियात बात हुई कैसे? बात यह थी कि अत्ज़ेल की एक बूढ़ी दाई थी जो उसे तरह-तरह की कहानियाँ सुनाया करती थी। उसने अत्ज़ेल के मन में बैठा दिया था कि स्वर्ग में न किसी को काम करना पड़ता है, न पढ़ाई। वहाँ रोज़ लज़ीज़ पकवान खाने को मिलते हैं और सबसे अच्छी बात यह है कि सुबह जल्दी नहीं उठना पड़ता है।

अत्ज़ेल आलसी स्वभाव का था। उसे सुबह जल्दी उठने और पढ़ाई करने से नफरत थी। उसे मालूम था कि एक न एक दिन उसे बाप का धन्धा सम्हालना ही पड़ेगा। और इसकी उसे ज़रा भी इच्छा नहीं थी।

लेकिन स्वर्ग जाने के लिए मरना ज़रूरी था। इसलिए उसने ठीक यही करने की ठान ली – जितनी जल्दी हो सके। उसने मरने के बारे में इतना सोचा कि उसे वहम हो गया कि वह मर ही गया है।

परिवार ने अत्ज़ेल को समझाने की हरचन्द कोशिश की कि वह मरा नहीं, ज़िन्दा है। लेकिन अत्ज़ेल न माना। वह यही कहता, "आप लोग मुझे दफना क्यों नहीं देते? देखते नहीं मैं मर गया हूँ? आप लोगों की वजह से मैं स्वर्ग नहीं जा पा रहा हूँ।"

परिवार वालों ने कहा, "लेकिन तुम तो बोल रहे हो! खा रहे हो! मुरदे कहीं खाते बोलते हैं?" अत्ज़ेल ने बोलना और खाना-पीना छोड़ दिया। वह धीरे-धीरे पीला पड़ने लगा।

परिवार वालों को समझ में नहीं आ रहा था कि इस बच्चे का करें तो क्या करें!

फिर किसी के कहने पर वे एक विशेषज्ञ की शरण में गए। उनका नाम डॉ. योएत्ज़ था। डॉ. योएत्ज़ ने पूरी बात ध्यान से सुनी। फिर कुछ देर सोचने के बाद कहा, "मैं आठ रोज़ में तुम्हारे बेटे को चंगा कर दूँगा। लेकिन मेरी एक शर्त है। तुम लोगों को वही करना पड़ेगा जो मैं कहूँगा, चाहे मेरी बात तुम्हें कितनी ही अजीब या अटपटी क्यों न लगे।"

परिवार वाले राज़ी हो गए।

डॉ. योएत्ज़ आए तो उन्हें अत्ज़ेल के कमरे में ले जाया गया। अत्ज़ेल अपने पलंग पर चुपचाप, बिना हिले-डुले लेटा हुआ था। खाना-पीना छोड़ देने से उसका चेहरा पीला पड़ गया था। डॉक्टर योएत्ज़ ने अत्ज़ेल को एक नज़र देखा और डाँटकर कहा, "तुम लोग इस लाश को घर के भीतर क्यों रखे हुए हो? इसे दफनाते क्यों नहीं?"

डॉक्टर की बात सुनकर अत्ज़ेल का चेहरा खिल गया।

डॉक्टर के कहने पर घर के एक कमरे को स्वर्ग की तरह सजा दिया गया था – दीवारों पर सफेद रंग के भारी परदे, खिड़की-दरवाज़े बन्द, दिन-रात जलती मोमबत्तियाँ और फरिश्तों के भेष में चार नए नौकर।

अत्ज़ेल को ताबूत में लेटाकर जनाज़े की सारी रस्में अदा की गईं। अत्ज़ेल खुशी के मारे इस कदर निढाल था कि उसे उसी पल नींद आ गई। जब उसकी आँख खुली तो उसने अपने आपको एक अनजान जगह में पाया।

"मैं कहाँ हूँ?" उसने पूछा।

"आप स्वर्ग में हैं मेरे आका।" एक पंख वाले नौकर ने जवाब दिया।

"मुझे बड़ी ज़ोर की भूख लगी है।" अत्ज़ेल ने कहा।

फौरन सोने की तश्तरियों में अनानास, अनार और कई लज़ीज़ व्यंजन आ गए।

अत्ज़ेल ने छककर खाया और गहरी सुखद नींद में डूब गया।

अत्ज़ेल जब सोकर उठा, सुबह हो चुकी थी। लेकिन उस कमरे में सुबह क्या और शाम क्या!

नौकरों ने जैसे ही देखा वह उठ गया है, वे फिर वैसे का वैसा खाना ले आए।

अत्ज़ेल ने पूछा, "यहाँ दूध, कॉफी, ताज़े रोल और मक्खन नहीं मिल सकता?"

"नहीं, मेरे आका। स्वर्ग में लोग हमेशा यही खाना खाते हैं।" जवाब मिला।

"दिन हो गया? या अभी रात ही है?" अत्ज़ेल ने पूछा।

"स्वर्ग में दिन-रात नहीं होते मेरे आका।" जवाब मिला।

"समय क्या हो गया होगा?" अत्ज़ेल ने पूछा।

"स्वर्ग में समय की कोई सत्ता नहीं होती मेरे आका।" जवाब मिला।

"अब मैं क्या करूँ?" अत्ज़ेल ने पूछा।

"स्वर्ग में कोई कुछ नहीं करता।" कुछ देर बाद जवाब मिला।

"क्या मैं स्वर्ग के दूसरे सन्त लोगों से मिल सकता हूँ?" अधीरता से उसने पूछा।

"नहीं मेरे आका। वे दूसरे ग्रहों पर रहते हैं।" जवाब मिला।

अत्ज़ेल चुप हो गया – चुप और उदास। अकेला और अनमना।

कुछ देर बाद मायूस अत्ज़ेल ने पूछा, "मेरा परिवार कब आएगा?"

कुछ पल बाद जैसे दूर से एक गूँजती हुई आवाज़ आई, "आपके पिता के जीवन के अभी बीस साल बाकी हैं। और माँ के तीस। जब तक वे जीवित हैं, यहाँ नहीं आ सकते।"

"और अक्साह?"

"उसे तो अभी पचास साल और जीना है।"

अत्ज़ेल चुप हो गया। और रोने लगा। चुपचाप उसकी आँखों से आँसू बहने लगे।

कुछ देर बाद पास खड़े दूसरे नौकर का हाथ पकड़कर अत्ज़ेल ने पूछा, "अक्साह इस समय क्या कर रही होगी?"

नौकर भाव शून्य स्वर में बोला, "इस समय तो वह आपका शोक मना रही है, लेकिन देर-सवेर वह आपको भूल जाएगी और किसी सुन्दर गबरू नौजवान से शादी कर लेगी। जीवन में ऐसा ही होता है।"

अत्ज़ेल बेचैनी में इधर-उधर करवटें बदलने लगा। स्वर्ग भी क्या मनहूस जगह निकली! उसने सोचा और ठण्डी आह भरी।

कोई कब तक पड़ा रहे! और रोज़ वही का वही एक जैसा "लजीज़" खाना खाता रहे! पहली बार... पहली बार उसे कुछ काम करने की इच्छा हो रही थी, लेकिन इस मनहूस स्वर्ग में करने को कोई काम भी नहीं था।

एक दिन अत्ज़ेल गहरी साँस छोड़कर बोला, "ज़िन्दगी भी ठीक ही थी।"

"ज़िन्दगी सरल नहीं है मेरे आका।" नौकर बोला "वहाँ रहने के लिए पढ़ाई करना पड़ती है, काम करना पड़ता है।"

"यहाँ पड़े रहने की बजाय तो मैं कुछ भी कर लूँ। पता नहीं, कब तक यहाँ ऐसे ही पड़ा रहना पड़ेगा।"

"अनन्त काल तक।"

"अनन्त काल तक? यहाँ? इससे तो अच्छा है कि मैं आत्महत्या कर लूँ। खुद को खत्म कर डालूँ। मर जाऊँ।"

"मरा हुआ आदमी दोबारा नहीं मर सकता मेरे आका!" नौकर बोला।

आठवें दिन जब अत्ज़ेल हताशा की चरम स्थिति में था, बाहर से एक नया फरिश्ता नौकर आया और बोला, "मेरे आका! एक भारी भूल हो गई है। आप मरे नहीं हैं। आपको स्वर्ग छोड़ना पड़ेगा।"

"मैं ज़िन्दा हूँ??"

"हाँ, आप ज़िन्दा हैं। और मैं आपको धरती पर छोड़ आऊँगा।"

अत्ज़ेल की खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

अत्ज़ेल की आँखों पर पट्टी बाँधी गई और घर के गलियारों में काफी देर इधर-उधर घुमाने के बाद उसे उस कमरे में ले आया गया जहाँ उसका परिवार उसका इन्तज़ार कर रहा था।

यह एक सुहाना दिन था। बाहर बगीचे में सुनहरी धूप फैली थी। पंछी चहचहा रहे थे और मधुमक्खियाँ गुनगुन कर रही थीं। अत्ज़ेल अपने माँ-बाप और अक्साह से लिपट गया और उन्हें चूमने लगा।

कुछ साल बाद अत्ज़ेल और अक्साह की शादी हो गई। शादी में डॉ. योएत्ज़ को मुख्य अतिथि के रूप में बुलाया गया। शादी का जश्न सात दिन तक चलता रहा।

अत्ज़ेल ने आलस्य छोड़ दिया और वह अपने इलाके के सबसे शानदार सौदागर के रूप में मशहूर हुआ।

अत्ज़ेल और अक्साह दोनों ने बड़ी लम्बी उम्र पाई। बाद के सालों में उन्होंने अत्ज़ेल के विचित्र इलाज की दिलचस्प दास्तान अपने बेटों-पोतों को भी सुनाई और हर बार अन्त में यह ज़रूर कहा – लेकिन वास्तव में स्वर्ग है तो कैसा है, यह कौन जानता है?

पुनर्लेखन - स्वयं प्रकाश

सभी चित्रः तापोशी घोषाल